# पोर्टफ़ोलियो

नामः- मुहम्मद फ़ैज़ान फ़ारूक़ी
कक्षाः- १०वीं - 'ब
रोल नंः- २१
स्कूलः- के•वी• २ सॉल्ट लेक

# जीवन परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल की महिषादल रियासत में माघ शुक्ल ११, संवत् ११५५, तदनुसार २१ फ़रवरी, सन १८१९ में हुआ था। वसंत पंचमी पर उनका जन्म मंगलवार को हुआ था। जन्म-कुण्डली बनाने वाली पंडत के कहने से उनका नाम सुर्जकुमार रखा गया। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के गढ़ाकोला नामक गाँव के निवासी थे।

निराला की शिक्षा हाई स्कूल तक हुई। बाद में हिंदी संस्कृत औ बाङ्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया। पिता की छोटी-सी नौकरी की असुविधाओं और मान-अपमान का परिचय निराला को आरंभ में ही प्राप्त हुआ। उन्होंने दलित-शोषित किसान के साथ हमदर्दी का संस्कार अपने अबोध मन से ही आर्जित किया। तीन वर्ष की अवस्था में माता और बीस वर्ष का होते-होते पिता का देहांत हो गया। अपने बच्चों के अलावा संयुक्त परिवार का भी बोझ निराला पर पड़ा। पहले महायुद्ध के बाद जो महामारी फैली उसमें न सिर्फ़ पत्नी मनोहरी देवी का, बल्कि चाचा, भाई और भाभी

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के भाव के अनुसार शिल्प में भी क्रांति की। उन्होंने परंपरागत छंदों को तोड़ा तथा छंदमुक्त कविताओं की रचना की। पहले उनका बहुत विरोध हुआ। परंतु बाद में हिंदी ने मानो उनकी लीक को अपना लिया। उनकी भाषा में संगीत का सरगम सुनाई देता है। उनकी 'बादल-राग' कविता मुक्त छंद होते हुए भी तुबले की थाप-सी गतिशील है। उन्होंने सामान्यतः संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग किया है। भाषा के कुशल प्रयोग से ध्वनियों के बिंब उठा देने में वे कुशल हैं। एक उदाहरण देखिए:-

बादल गरजो,
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!

निराला की भाषा का प्रवाह दर्शनीय है। उन्होंने मानवीकरण अलंकार का प्रचुर प्रयोग किया है। वे हिंदी के दक्ष कवि हैं।

सूर्यकांत की काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता है चित्रण-कौशल। आंतरिक भाव हो या बाह्य जगत के दृश्य-रूप, संगीतात्मक ध्वनियाँ हो या बाह्य जगत रंग और गंध, सजीव चरित्र हों या प्राकृतिक दृश्य, सभी अलग-अलग लगनेवाले तत्त्वों को घुला-मिलाकर निराला ऐसा जीवंत चित्र उपस्थित करते हैं कि पढ़ने वाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है। निराला के चित्रों में उनका बोध ही नहीं, उनका चिंतन भी समाहित रहता है। इसलिए उनकी बहुत-सी कविताओं में दार्शनिक गहराई उत्पन्न हो जाती है। इस नए चित्रण-कौशल और दार्शनिक गहराई के

कारण अक्सर निराला की कविताएँ कुछ जटिल हो जाती हैं, जिसे न समझते के नाते विचारक लोग उन पर दुरूहता आदि का आरोप लगाते हैं। उनके किसान-बोध ने ही उन्हें छायावाद की भूमि से आगे बढ़कर यथार्थवाद की नई भूमि निर्मित करने की प्रेरणा दी। विशेष स्थितियों, चरित्रों और दृश्यों को देखते हुए उनके मर्म को पहचाना और उन विशिष्ट वस्तुओं को ही चित्रण का विषय बनाना, निराला के यथार्थवाद की एक उल्लेखनीय विशेषता है। निराला पर अध्यात्मवाद और रहस्यवाद जैसी जीवन-विमुख प्रवृत्तियों का भी असर है। इस असर के चलते वे बहुत बार चमत्कारों से विजय प्राप्त करने और संघर्षों का अंत करने का सपना देखते हैं। निराला की शक्ति यह है कि वे चमत्कार के भरोसे अकर्मण्य नहीं बैठ जाते और संघर्ष का अंत की वास्तविक चुनौती से आँखें नहीं चुराते। कहीं-कहीं रहस्यवाद के फेर में निराला वास्तविक जीवन-अनुभवों के विपरीत चलते हैं। हर ओर प्रकाश फैला है, जीवन आलोकमय महासागर में डूब गया है, इत्यादि ऐसी ही बाते हैं। लेकिन यह रहस्यवाद निराला के भावबोध में स्थायी नही रहता, वह क्षणभंगुर ही साबित होता है। अनेक बार निराला शब्दों, ध्वनियों आदि को लेकर खिलवाड़ करते हैं। इन खिलवाडों को कला की संज्ञा देना कठिन काम है। लेकिन सामान्यतः वे इन खिलवाडों के माध्यम से बड़े चमत्कारपूर्ण कलात्मक प्रयोग करते हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की पहली नियुक्ति महिषादुल राज्य में ही हुई। उन्होंने १९१८ से १९२२ तक यह नौकरी की। उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य की ओर प्रवृत्त हुए। १९२२ से १९२३ के दौरन कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया, १९२३ के अगस्त से मतवाला के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई जहाँ वे संस्था की मासिक पत्रिका सुधा से १९३५ के मध्य तक संबंद्द रहे। १९३५से १९४० तक का समय उन्होंने लखनऊ में भी बिताया। इसके बाद १९४२ से मृत्यु पर्यन्त इलाहाबाद में रह कर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक। उनकी पहली कविता जन्मभूमि प्रभा नामक मासिक पत्र में जून १९२० में, पहली कविता संग्रह १९२३ में अनामिका नाम से, तथा पहला निबंध बंग भाषा का उच्चारण अक्टूबर १९२० में मासिक पत्रिका सरस्वती में प्रकाशित हुआ।

अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिन्दी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। 1930 में प्रकाशित अपने काव्य संग्रह परिमल की भूमिका में वे लिखते हैं।

# बादल संबंधित पंक्तियाँ

झूम-झूम मृदु गरज-गरज घन घोर।
राग अमर! अंबर में भर निज रोर!

झर झर झर निर्झर-गिरि-सर में,
घर, मरु, तरु-मर्मर, सागर में,
सरित-तड़ित-गति-चकित पवन में,
मन में, विजन-गहन-कानन में,
आनन-आनन में, रव घोर-कठोर-
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर!

अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू बरस-बरस रसधार!
पार ले चल तू मुझको,
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन-भैरव-संसार!

उथल-पुथल कर हृदय-
मचा हलचल-
चल रे चल-
मेरे पागल बादल!

धँसता दलदल
हँसता है नद खल-खल
बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल।

देख-देख नाचता हृदय
बहने को महा विकल-बेकल,
इस मरोर से-इसी शोर से-
सघन घोर गुरु गहन रोर से
मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर!
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर!

# पानी और बादल का संवाद

पानी:- मित्र बादल। कहाँ जा रहे हो? मुझे भी अपने साथ ले चलो।

बादल:- कैसी बात करते हो, मित्र जल। तुम्हारे बिना तो मेरा अस्तित्त्व ही नहीं है, तुम्हारे बिना मैं कैसे जा सकता हूँ?

पानी:- अरे मित्र! मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। मैं जानता हूँ मेरा और तुम्हारा दिया और बाती जैसे साथ है।

बादल:- हाँ मित्र! आज कहीं दूर जाकर बरसने का मन कर रहा है।

पानी:- तो फिर चलो निकलते चलते हैं।

बादल:- हाँ मित्र। तुम जल्दी से मेरे अंदर समा जाओ और फिर हम उड़ चलें, दूर कहीं, बरसने के लिए।

पानी:- आती हूँ मित्र!

बादल:- हाँ मित्र!